वन्देमातरम्

बेकसों के आँसू

जेल यातना हो निर्दय दल करे गोलियोंकी बौछार।
ईश्वरका सुमिरण कर वीरों सहते जाओ अत्याचार॥
चिन्ता नहीं बहे लहराता चहुँदिशि खून जवानोंका।
बिन स्वराज्य के नहीं हटेंगे कौल रहे मर्दानों का॥

सम्पादक—
श्री त्रिभुवननाथ 'आजाद'

प्रकाशक—
शिवनन्दनप्रसाद वर्म्मा "शिव"
रूपगंज, छपरा।

सर्वाधिकार सुरक्षित।

प्रथमावृत्ति] सन् १९३० ई० [मूल्य -)

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
30 MAR 1931

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 272
Date 6.12.71
GOVT. OF INDIA

बेकसों के आँसू ।

'पथिक' प्रलाप

देवी स्वतंत्रते तू कबतक प्रशन्न होगी ।
कह दो दयामयी मां दर्शन हमें न दोगी ॥
हम हैं अबोध तेरे निर्बल निरीह बच्चे ।
प्रति दिन सताये जाते अब्बे खबर न लोगी ॥
तेरे बिना न हमको अब चैन रात दिन है ।
आराधना तुम्हारी करते हैं असहयोगी ॥
सन्तान हम तुम्हारी जननी तू है हमारी ।
अब मर मिटे सभी हैं तो भी न क्या मिलोगी ॥
लाखों मुसीबतें हम सहते हैं और सहेंगे ।
देखें कि कब तलक तुम यों रूठी ही रहोगी ॥
गर पुत्र प्यार माता कुछ हो हृदय तुम्हारे ।
तब तो विनय हमारी कुछ तो अवश्य सुनोगी ॥
परतंत्र है "पथिक" भी पीड़ित पिशाच गण से ।
मां मां पुकारता है इसका न दुख हरोगी ॥

(मार्कण्य शर्मा से प्राप्त)

वतन पर मर मिटें शादाँ बशर गर हो तो ऐसा हो।
न सहमें जेल सूली से दिलावर हो तो ऐसा हो॥
रहे वह जेल में पहने जो पेरिस का धुला कपड़ा।
दिखाया त्याग का रस्ता जो रहेवर हो तो ऐसा हो॥
तपी त्यागी व्रती योगी नियम का पालने वाला।
हुआ है कौन गाँधी सा मुकद्दर हो तो ऐसा हो॥
निहत्थे बेगुनाहों पर मदन से प्यारे बच्चों पर।
चलाये गोलियाँ जालिम सितमगर हो तो ऐसा हो॥
गये फाँसी पर कितने चढ़ नहीं प्राणों का भय माना।
शिवा प्रताप से गर वीर पैदा हो तो ऐसा हो॥
जो तज श्रृङ्गार की बातें रचें निज देश पर कविता।
वही कवि हैं जो पूछो तो सखुन वर हो तो ऐसा हो॥
बहादुर के हों पावों बेड़ियाँ और हाथ हथकड़ियाँ।
गलेमें तौक हों पहने जो ज़ेवर हो तो ऐसा हो॥

स्वराज्य लेंगे

[रामदयाल चौ० से प्राप्त]

कहते हैं ताल देकर लेंगे स्वराज्य लेंगे।
बैठे न चुप रहेंगे लेंगे स्वराज्य लेंगे॥
अब यह गुलामियत की जंजीर तोड़ करके।
स्वच्छन्द हो रहेंगे लेंगे स्वराज्य लेंगे॥

मुद्दत के बाद गफलत से जाग हम गये हैं।
सबसे यही कहेंगे लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥
भारत हुआ है गारत उसका सुधार करके।
माता के दुःख हरेंगे लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥
यह देश है हमारा ऊँचा इसे उठाकर।
स्वतंत्रता लहेंगे लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥
यह आत्मा अमर है मारे न मर सकेंगे।
क्या मौत से डरेंगे लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥
स्वर्गीय देशको फिर नन्दन विपिन बनाकर।
तब मौन व्रत गहेंगे लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥

स्वदेश हित

भारत मां के पावन पद की जंजीर गुलामी तोड़ेंगे।
जालिम के जुल्मों से न कभी सपने में भी मुख मोड़ेंगे ॥
शीघ्र शान्ति सदन में बैठ प्रेम से चर्खे से मन जोड़ेंगे।
पावन खद्दर को बड़े प्रेम से हिलमिल कर सब ओढ़ेंगे ॥
कोड़े की मारें खा खाकर हम जेल द्वार भी खोलेंगे।
हँसते हँसते शूली पर चढ़ हम जननी की जय बोलेंगे ॥
माता के चरणों में ही बस सर्वस्व निछावर हो लेंगे।
जीना व मरना इसी लिये हम सुख स्वदेश हित खोलेंगे ॥

अवतारी

हुए भारत के हितकारी देखो गांधी जी हैं अवतारी।
उठे ये झण्डा तिरंगा लेकर देश देश में लेक्चर देकर,

किये बश में सभी नर नारी ॥ देखो० ॥
विदेशियों को खूब छकाया दर दर देशी नमक बनाया ।
रोवें लन्दन के व्यापारी ॥ देखो० ॥
देश में हलचल खूब मचाये जेल में जाकर आप समाये,
सहे दुख मुसीबत भारी ॥ देखो० ॥
घर घर में चर्खा चलवाये विलायती कपड़े जलवाये,
किया खद्दर का बस्त्र है जारी ॥ देखो० ॥
शराब गाँजा भाँग चरस का ताड़ी का तो दिवाला खसका,
किया जब से पिकेटिङ्ग जारी ॥ देखो० ॥
ग्यारह बात का सवाल डाला वह भी है पूरा होने वाला ।
हशरत ये है असीस हमारी ॥ देखो० ॥

ससुराल जाकर

पारटी अपनी क़ौमी बनाकर । लेंगे स्वराज्य ससुराल जाकर ॥
अब तो चमका मुक़द्दर हमारा । रंजो ग़म दूर होवेगा सारा ॥
नारा वन्देमातरम् लगाकर,
डर नहीं जेलखानों से हमको, काम आज़ादीसे हैगा हमको ।
जेल जाते हैं ख़ुशियाँ मना कर,
जेलखाना है ससुरालका घर; घरको ससुरालके मालसे भर ।
सर पे गोरों के डंका बजाकर,
जेलखाना है ससुराल सबकी, उसमें जाकरके पीसेंगे चक्की ।
नाम जिन्दों में अब हम लिखाकर,

मर्द मैदान है गाँधी जी का, और तैय्यब व जफ़र अली का।

गांधी जी के हुकम को बजाकर,

जेलखाने का कुछ डर नहीं है, फांसी पानेका कुछ डर नहीं है।

अब तो गोरों को लन्दन भगाकर ॥

टेक्स चौकीदारी

भारत के भाइयों से यह है अरज हमारी,

कर देव बन्द देना यह टेक्स चौकीदारी ॥

भारत के वीर लाखों जेलों में रम रहे हैं।

अब है तुम्हारी वारी जल्दी बढ़ो अगारी ॥

गर दिलमें कुछ दरद हो, तुम वाक़ई मरद हो।

गोली भी चल रही हो हटना मती पिछारी ॥

नीलाम माल कोई भी गर खरीद ले तो।

तो ऐसे आदमी को हरगिज न दो सवारी ॥

ये रहने वालों भारत के हिन्दू मुसलमानों।

मिल करके दोनों भाई दो फूटको निकारी ॥

चाहें लाट कलक्टर हो, या कोई आफ़िसर हो।

चहें जितना ज़ुलम करले करना न आहो जारी ॥

तुम आह को हमारी, बम से न कम समझना।

ज़ालिम को मिटा देंगे 'शर्मा' कहैं पुकारी ॥ कर ॥

भगाना पड़ेगा

ये शासन विदेशी मिटाना पड़ेगा।

अब युद्ध का डंका बजाना पड़ेगा ॥

झंडा तिरंगा उठा करके रणमें,
क़दम अपना आगे बढ़ाना पड़ेगा ॥
चलावें मशीनें व तोपें व गोले,
उठा अपना चर्खा चलाना पड़ेगा ॥
तोड़ेंगे निर्भय हो कानून उनके,
भले ही अगर जेल जाना पड़ेगा ॥
लगायेंगे अब क्रांति की जय के नारे,
बस भारत से इनको भगाना पड़ेगा ॥
बदलता ज़माना अब रंग जा रहा है,
उन्हें खुद बखुद मुँह की खाना पड़ेगा ॥

बनायेगा चर्खा

इन गोरों को लन्दन भगायेगा चर्खा ।
विदेशी चलन को मिटायेगा चर्खा ॥
हिन्दू मुसल्माँ हैं भाई हमारे,
ये भाव दोनों में लायेगा चर्खा ।
अभी तक तो भारत सोया पड़ा था,
अब सोये हुए को जगायेगा चर्खा ।
जो माले खजाना के ढो ले गये हैं,
उन्हें देश में फिर मँगाएगा चर्खा ।
अभी तक जो गाँजा शराबादि पीते,
उन्हें भूत बनकर सतायेगा चर्खा ।
अभी तक शहीदे वतन जो हुए हैं,

उन्हें देश में फिर बुलायेगा चर्खा ।
कपड़े बिना जितने नंगे पड़े हैं,
उन्हें पूरा कपड़ा दिलायेगा चर्खा ।
"त्रिभुवन" कहे जो तू कातोगे चर्खे ।
तो दुश्मन को चर्खा बनायेगा चर्खा ॥

बहनों से अपील

ए बहनों सुनलो जी कहाती भारत माँ पुकार के ।
अब जेलें भर दो जी हैं तो जीना दिन चार के ॥
हो भारत की ललनाए तुम भारत तुम्हारी ।
अपनी माँ का दुःखड़ा लख कर अब आजाओ आगारी ॥
आशा पूरन करदो जी मन में ऐसा विचार के ।
भारत की इस पुरुष जाति से अब न भरोसा मुझको ॥
जब लौं उनके आगे बेटी नयनन लखो न तुमको ।
अपना तन मन देदो जी करुणा मेरी निहार के ॥
अर्धांगिनी कहाकर भी जो आधा करन दिखैहौ ।
अपनी माता का पय पीकर क्या तुम उसे लजैहौ ॥
मेरा आँचल भरदो जी अजहु मुझको उबार के ।
स्वर्ण भूषण वसन विदेशी तन से दूर करो ॥
सत्याग्रह समरांगन में आ राष्ट्र ध्वजा पकरो ।
अपने पग तल दल दो जी "भीम" शासन सरकार के ॥

क्या चाहते हैं

बतायें तुम्हें हम कि क्या चाहते हैं।
गुलामी से होना रिहा चाहते हैं॥
अगर वह न अपनी गुलामी से छोड़ें।
तो फिर जेल की हम सज़ा चाहते हैं॥
रहें फूस खपरैल के घर में क्यों हम।
उसी पक्के घर में रहा चाहते हैं॥
नहीं घर के खाने में अब ज़ायका है।
वहाँ का भी लेना मज़ा चाहते हैं॥
वह तीरथ है वाँ कृष्ण पैदा हुए थे।
वहीं चलके पूजा किया चाहते हैं॥
दिवाला निकल जाय जेलों का एक दम।
उसे इस क़दर हम भरा चाहते हैं॥
वह नाहक डराते हैं हमको सज़ा से।
खुशी से उन्हें सर दिया चाहते हैं॥
अजी ऐसे जीने पै सौ बार लानत।
वतन के लिए हम मरा चाहते हैं॥
घड़ा पाप का ग़ालिब भर चुका है।
जमाने से ज़ालिम मिटा चाहते हैं॥

सुधार नशेबाजों का

भारत के भाइयों से बार बार कहतानी,
छोड़ देहु पिअल शराब निसखोरवा।

धन नुकसान करि गाँजा और भाँग पियें,
धरम इमान सब खोवें ताड़ीखोरवा ॥
नाहीं रहे पइसा तो घरे तकरार करें,
जोरुआ से; करज़ा मँगावें निसखोरवा ॥
करज़ा जो माँगे नाहीं मिले तब जोरुआ से,
मेहरी का गहना बेचावें निसखोरवा ॥
रुपया तो लेइ कर गइले सुड़ीखनवाँ में,
बाबू २ कहिके चिल्लात निसखोरवा ।
घट २ पिये लागे छनके कलेजवा में,
थु थु करके आँख मलकावें निसखोरवा ॥
नशा जब होइ गइले अक बक बोले लागै,
लात जूता मिले जलपान निसखोरवा ।
सड़क में चलताड़े डगमग पाँव हिलें,
चारो ओर झगड़ा मचावें निसखोरवा ॥
धरले सिपाही तब हण्टर की मार मारें,
बाप २ कहि गोड़ पड़े निसखोरवा ॥
रात दिन दरुवा में रहत बेहाल तूँ तो,
जोरुआ तो और संग फँसे निसखोरवा ।
लाज औ धरम के तो सोंच नाहीं मनवां में,
सबके तैं ससुरा कहाउते निसखोरवा ॥
मुहँवा गमके तुहरा भेड़िया के मूत जैसे,
शरम न लागे हाय पीवे निसखोरवा ।

जोरू तोरा ताना मारे भडुवा गुलाम कहे,
नाहीं मिले भरपेट अन्न निसखोरवा ॥
धिक तोरा माई बाप धिक तोरा गुरू जी के,
लाख धिक गाँव जहाँ भइले निसखोरवा ।
भारत कंगाल भइल उलटी चलनियाँ से,
काहे नाहीं ज्ञानी मुनी होवे निसखोरवा ॥
दूध दही छोड़कर दरुआ से पेट भरें,
कमियां कुचलिया कहावे निसखोरवा ।
धन नुकसान करि ताड़ी औ शराब पियें,
धरम इमान सब खोवे निसखोरवा ॥
कहैं रामदास निशाखोरवों से हाथ जोरि,
छोड़ि देहु पियल शराब निसखोरवा ।
बार २ कर जोड़ि तोहरा से कहत बानी,
आज से कसम खाइ जाऊ निसखोरवा ॥

बीबी नौकरशाही ने

[शिवनन्दन प्रसाद वर्म्मा "शिव"]

भारत पै जुल्म मचाती है इन बीबी नौकरशाही ने ।
अन्याय भी सब पर करती है इन बीबी नौकरशाही ने ॥
नित शान्ति चाहने वालों को जेलों में यह भेजवा करके ।
खुद अक्लमन्द बन फिरती है इन बीबी नौकरशाही ने ॥
भारत स्वाधीन बनाने को जितने नेता हैं लगे हुए ।

उन पर डण्डे चलवाती है इन बीबी नौकरशाही ने ॥
यह सख्त गुलामी की बेड़ी तोरन हित सैनिक डटे जो हैं।
इनको कर तंग सताती है इन बीबी नौकरशाही ने ॥
हम निरे निहत्थे लोगों पर कहीं गोली भी चलवाती है।
है बनी खुशामद की टट्टू इन बीबी नौकरशाही ने ॥
किस तौर लूटते हैं जालिम; धन माल खजाना भारत का।
तिसपर कुछ भी नहीं सुझती है, इन बीबी नौकरशाही ने ॥
हो करके भाई हमारे ही ये पुलिस दरोगा हैं जितने।
"शिव" आज बगावत करती है इन बीबी नौकरशाही ने ॥
मतभेद अभी से त्यागन कर ऐ देश सपूतों भारत का।
कल्याण भी तेरी है इसमें सुन बीबी नौकरशाही ने ॥

'दुःखी भारत'

भारत भूमी की हीन दशा का क्या मैं आज बयान करूँ।
आँसू आता है नैनों से क्या लिखूं और क्या गान करूँ ॥
भारत के शिक्के डेढ़ अरब हर साल विदेशों जाते हैं।
हैं भूखे मरते भारतीय अरु गैरों मजे उड़ाते हैं ॥
लाद लाद लोहा खालिस को जितने भी विदेशी आते हैं।
भारत भूमि को छूते ही बनकर स्वर्ण घर जाते हैं ॥
मान के शिक्षक सब देशों का लोग यहाँ पर आते थे।
विद्या पढ़ने के लिये वृद्ध भारत के चरण दबाते थे ॥
पर आज हमें काला हबशी औ पुरुष असभ्य बतलाते हैं।

जब बिगड़ गयी हालत हमरी, तब आँखें हमें दिखाते हैं ॥
पाकर हमसे ही धन विद्या कस उलटे शान जनाते हैं ।
जब हमें परस्पर प्रेम न है तब ही तक रोब गठाते हैं ॥
हम सबको याद भी है एक दिन बचपन में जिन्हें पढ़ाये थे ।
औ वस्त्र पहीनना सीखकर भी पुरुषत्व हमीं से—पाये थे ॥
"शिव" भाग्य फूट गया भारत का अधिकार विदेशीने छीना ।
धिक्कार सभी इन भारति को पराधीन होकर जीना ॥

भारतीय सिंह गर्जना

बजा है वीरों का करतार ।
भगेगा भारत से सरकार ॥
हम सब भारत के वासी हैं, कहता हूँ ललकार ।
छुट गया था भारत हमसे, गाँधी किया पुकार ॥
करो जी भारत का उपकार ।
बजा है वीरों का करतार ॥
देंगे प्राण मगर नहीं देंगे, टिकट चौकीदार ।
कष्ट अनेकों सहकर भारती, हो गये हैं तैयार ॥
समझ कर करना हमसे रार ।
बजा है वीरों का करतार ॥
कौन अमर हो आया एक दिन, मरेगा सब संसार ।
भारत माँ के बलि वेदी पर, धरेंगे शीश उतार ॥
मरूँगा या लूँगा अधिकार ।
बजा है वीरों का करतार ॥

करेंगे भारत स्वर्ग तुल्य हम कहते हैं सौ बार।
सत्याग्रह से इन गोरों को कर दूँगा—संघार॥
तभी तो भारत का उद्धार।
बजा है वीरों का करतार॥
होकर भारति हम सब वीरों, सहते अत्याचार।
करें गुलामी विदेशियों की, उनको है धिक्कार॥
कहते हैं "शिवनन्दन" हर बार।
बजा है वीरों का करतार॥

आज़ादी के दीवानों ने

सहते हैं अत्याचारों को आज़ादी के दीवानों ने।
नित जाते कारागारों को आज़ादी के दीवानों ने॥
ऐ भारत के सन्तानों उठो नहीं समय रहा अब सोने का।
जब जगा दिया भारत को ये आज़ादी के दीवानों ने॥ १॥
ऐ वीर सपूतों भारत के उठ बैठो आँखें अब खोलो।
हथियार शान्ति की कर में ली आज़ादी के दीवानों ने॥
श्रीराम कृष्ण अर्जुन भीषम को व्यर्थ न अब बदनाम करो।
उनके ऐसा तुम कार्य करो आज़ादी के दीवानों ने॥ २॥
घुस गये विदेशी भारत में सब माल लूट ले जाते हैं।
ठगियों को मज़ा चखा डाली आज़ादी के दीवानों ने॥
उड़ गये होश उन ठगियों के नये आर्डिनेन्स किये जारी।
इन शस्त्रों की परवाह न की आज़ादी के दीवानों ने॥ ३॥

चलवा दी डण्डे गोरों ने कहीं गोली भी चलवाई है ।
पर सीने पर गोली सहते, आज़ादी के दीवानों ने ॥
खूनों से अपने वीरों ने है सिंचते भारत का गुलशन ।
"शिवनन्दन" कुछ परवाह न की आज़ादी के दीवानों ने ॥४॥

भारत-वीरों उठो

ऐ उठो बीर भारतवासी, जब धर्म युद्ध करना होगा ।
शान्तिमय संग्राम मचा नित, भारत दुःख हरना होगा ॥
पूज्य भारत के व्यथित हृदय की, विषय पीर हरना होगा ।
बाल वृद्ध सब नर नारिन को, स्वार्थ त्याग करना होगा ॥१॥
छोटे बड़े सभी के उर में, बीर भाव भरना होगा ।
"बिना स्वराज्य के नहीं हटेंगे" प्रण यह दृढ़ करना होगा ॥
कोई लाख डरायें जेलों से, "शिव" कभी नहीं डरना होगा ।
मातृभूमि के लिए प्रेम से, उचित तुम्हें मरना होगा ॥

समाप्त ।

पता—१—राजाराम शर्मा, 'भीम'
भीम पुस्तक भंडार, तिनकोनियाँ, छपरा।

पता—२—हिन्दू समाज सुधार कार्यालय,
सआदतगंज रोड, लखनऊ।

जे० पी० अरोड़ा द्वारा—
'लक्ष्मी-प्रेस' नीलकण्ठ, बनारस में मुद्रित।